

अध्याय- 4

लड़के और लड़कियों
के रूप में बड़ा होना



इकाई- 3

लिंग बोध- जेंडर
Gender

**NCERT
Based**

**CLASS - VIIth
(Polity)**



By : Karan Sir

इकाई - 3, अध्याय- 4

लड़के और लड़कियों के रूप में
बड़ा होना ✓

**Growing up as Boys and
Girls**

Unit - 3 GENDER

Chapter - 4- Growing up as Boys and Girls



लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना

लड़का या लड़की होना किसी की भी एक महत्वपूर्ण पहचान है उसकी अस्मिता है। जिस समाज के बीच हम बड़े होते हैं, वह हमें सिखाता है कि लड़के और लड़कियों का कैसा व्यवहार स्वीकार करने योग्य है। उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं। हम प्रायः यही सोचते हुए बड़े होते हैं कि ये बातें सब जगह बिलकुल एक-सी हैं। परंतु क्या सभी समाजों में लड़के और लड़कियों के प्रति एक जैसा ही नज़रिया है? इस पाठ में हम इसी प्रश्न का उत्तर

Growing up as Boys and Girls

Being a boy or a girl is an important part of one's identity. The society we grow up in teaches us what kind of behaviour is acceptable for girls and boys, what boys and girls can or cannot do. We often grow up thinking that these things are exactly the same everywhere. But do all societies look at boys and girls in the same way? We will try and answer this question

UPSC
Mach

जानने की कोशिश करेंगे। हम यह भी देखेंगे कि लड़के और लड़कियों को दी जाने वाली अलग-अलग भूमिका उन्हें भाविष्य में स्त्री और पुरुष की भूमिका के लिए कैसे तैयार करती है। इस पाठ में हम देखेंगे कि अधिकांश समाज पुरुष व स्त्रियों को अलग-अलग प्रकार से महत्त्व देते हैं। स्त्रियाँ जिन भूमिकाओं का निर्वाह करती हैं, उन्हें पुरुषों द्वारा निर्वाह की जाने वाली भूमिकाओं और कार्य से कम महत्त्व दिया जाता है। इस पाठ में हम यह भी देखेंगे कि स्त्री और पुरुष के बीच काम के क्षेत्र में असमानताएँ कैसे उभरती हैं।

in this chapter. We will also look at how the different roles assigned to boys and girls prepare them for their future roles as men and women. We will learn that most societies value men and women differently. The roles women play and the work they do are usually valued less than the roles men play and the work they do. This chapter will also examine how inequalities between men and women emerge in the area of work.

पुरुष
महिला

1920 के दशक में सामोआ द्वीप में बच्चों का
बड़ा होना

Growing up in Samoa in the 1920s

✓ Mr



कक्षा सात का एक सामोआ छात्र अपने विद्यालय की वर्दी में।

1920 के दशक में सामोआ द्वीप में बच्चों का बड़ा होना

सामोआ द्वीप प्रशांत महासागर के दक्षिण में स्थित छोटे-छोटे द्वीपों के समूह का ही एक भाग है। सामोआन समाज पर किए गए अनुसंधान की रिपोर्ट के अनुसार 1920 के दशक में बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। वे बड़े बच्चों और वयस्कों से बहुत-सी बातें सीखते थे, जैसे-छोटे बच्चों की देखभाल या घर का काम कैसे करना, आदि। द्वीपों पर मछली पकड़ना बड़ा महत्वपूर्ण कार्य था इसलिए किशोर बच्चे मछली पकड़ने के लिए सुदूर यात्राओं पर जाना सीखते थे। लेकिन ये बातें वे अपने बचपन के अलग-अलग समय पर सीखते थे।

Growing up in Samoa in the 1920s

The Samoan Islands are part of a large group of small islands in the southern part of the Pacific Ocean. In the 1920s, according to research reports on Samoan society, children did not go to school. They learnt many things, such as how to take care of children or do household work from older children and from adults. Fishing was a very important activity on the islands. Young people, therefore, learnt to undertake long fishing expeditions. But they learnt these things at different points in their childhood.

छोटे बच्चे जैसे ही चलना शुरू कर देते थे उनकी माताएँ या बड़े लोग उनकी देखभाल करना बंद कर देते थे। यह जिम्मेदारी बड़े बच्चों पर आ जाती थी, जो प्रायः स्वयं भी पाँच वर्ष के आसपास की उम्र के होते थे। लड़के और लड़कियाँ दोनों अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करते थे, लेकिन जब कोई लड़का लगभग नौ वर्ष का हो जाता था, वह बड़े लड़कों के समूह में सम्मिलित हो जाता था और बाहर के काम सीखता था, जैसे - मछली पकड़ना और नारियल के

As soon as babies could walk, their mothers or other adults no longer looked after them. Older children, often as young as five years old, took over this responsibility. Both boys and girls looked after their younger siblings. But, by the time a boy was about nine years old, he joined the older boys in learning outdoor jobs like fishing and planting coconuts. Girls had to continue looking after small

पेड़ लगाना। लड़कियाँ जब तक तेरह-चौदह साल की नहीं हो जाती थीं, छोटे बच्चों की देखभाल और बड़े लोगों के छोटे-मोटे कार्य करती रहती थीं, लेकिन एक बार जब वे तेरह-चौदह साल की हो जाती थीं, वे अधिक स्वतंत्र होती थीं। लगभग चौदह वर्ष की उम्र के बाद वे भी मछली पकड़ने जाती थीं, बागानों में काम करती थीं और डलियाँ बुनना सीखती थीं। खाना पकाने का काम, अलग से बनाए गए रसोई घरों में ही होता था जहाँ लड़कों को ही अधिकांश काम करना होता था और लड़कियाँ उनकी मदद करती थीं।

children or do errands for adults till they were teenagers. But, once they became teenagers they had much more freedom. After the age of fourteen or so, girls also went on fishing trips, worked in the plantations, learnt how to weave baskets. Cooking was done in special cooking-houses, where boys were supposed to do most of the work while girls helped with the preparations.

आपके बड़े होने के अनुभव, सामोआ के बच्चों और किशोरों के अनुभव से किस प्रकार भिन्न हैं? इन अनुभवों में वर्णित क्या कोई ऐसी बात है, जिसे आप अपने बड़े होने के अनुभव में शामिल करना चाहेंगे?

In what ways do the experiences of Samoan children and teenagers differ from your own experiences of growing up? Is there anything in this experience that you wish was part of your growing up?



लड़कियाँ स्कूल जाते हुए समूह बनाकर चलना क्यों पसंद करती हैं?

Why do girls like to go to school together in groups?

जाती

1960 के दशक में मध्य प्रदेश में पुरुष के रूप में बड़ा होना

निम्नलिखित आलेख 1960 में मध्य प्रदेश के एक छोटे शहर में रहने और स्कूल जाने के वर्णन से लिया गया है।

कक्षा 6 में आने के बाद लड़के और लड़कियाँ अलग-अलग स्कूलों में जाते थे। लड़कियों के स्कूल, लड़कों के स्कूल से बिलकुल

**Growing up male in
Madhya Pradesh in the 1960s**

The following is adapted from an account of experiences of being in a small town in Madhya Pradesh in the 1960s.

From Class VI onwards, boys and girls went to separate schools. The girls' school was designed very differently from the boys' school. They had a central courtyard where they played in total seclusion and

अपने पड़ोस की किसी गली या पार्क का चित्र बनाइए। उसमें छोटे लड़के व लड़कियों द्वारा की जा सकने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को दर्शाइए। यह कार्य आप अकेले या समूह में भी कर सकते हैं।

आपके द्वारा बनाए गए चित्र में क्या उतनी ही लड़कियाँ हैं जितने लड़के? संभव है कि आपने लड़कियों की संख्या कम बनाई होगी। क्या आप वे कारण बता सकते हैं जिनकी वजह से आपके पड़ोस में, सड़क पर, पार्कों और बाजारों में देर शाम या रात के समय स्त्रियाँ तथा लड़कियाँ कम दिखाई देती हैं?

क्या लड़के और लड़कियाँ अलग-अलग कामों में लगे हैं? क्या आप विचार करके इसका कारण बता सकते हैं? यदि आप लड़के और लड़कियों का स्थान परस्पर बदल देंगे, अर्थात् लड़कियों के स्थान पर लड़कों और लड़कों के स्थान पर लड़कियों को रखेंगे, तो क्या होगा?

Make a drawing of a street or a park in your neighbourhood. Show the different kinds of activities young boys and girls may be engaged in. You could do this individually or in groups.

Are there as many girls as boys in your drawing? Most probably you would have drawn fewer girls. Can you think of reasons why there are fewer women and girls in your neighbourhood streets, parks and markets in the late evenings or at night?

Are girls and boys doing different activities? Can you think of reasons why this might be so? What would happen if you replaced the girls with the boys and vice-versa?

अलग ढंग से बनाए जाते थे। उनके स्कूल के बीच में एक आँगन होता था, जहाँ वे बाहरी दुनिया से बिलकुल अलग रह कर स्कूल की सुरक्षा में खेलती थीं। लड़कों के स्कूल में ऐसा कोई आँगन नहीं होता था बल्कि उनके खेलने का मैदान बस एक बड़ा-सा खुला स्थान था जो स्कूल से लगा हुआ था। हर शाम स्कूल के बाद लड़कें, सैकड़ों लड़कियों की भीड़ को सँकरी गलियों से जाते हुए देखते थे। सड़कों

safety from the outside world. The boys' school had no such courtyard and our playground was just a big space attached to the school. Every evening, once school was over, the boys watched as hundreds of school girls crowded the narrow streets. As these girls walked on the streets, they looked so purposeful.

पर जाती हुई ये लड़कियाँ बड़ी गंभीर दिखती थीं। यह बात लड़कों से अलग थी, जो सड़कों को अनेक कामों के लिए उपयोग करते थे जैसे यूँ ही खड़े-खड़े खाली समय बिताने के लिए, दौड़ने और खेलने के लिए और साइकिल चलाने के करतबों को आजमाने के लिए। लड़कियों के लिए गली सीधे घर पहुँचने का एक माध्यम थी। लड़कियाँ हमेशा समूहों में जाती थीं। शायद उनके मन में यह डर रहता था कि कोई उन्हें छेड़ न दे या उन पर हमला न कर दे।

This was unlike the boys who used the streets as a place to stand around idling, to play, to try out tricks with their bicycles. For the girls, the street was simply a place to get straight home. The girls always went in groups, perhaps because they also carried fears of being teased or attacked.

ऊपर के दो उदाहरणों को पढ़ने के बाद हमें लगता है कि बड़े होने के भी कई तरीके हैं। हम प्रायः सोचते हैं कि बच्चे एक ही तरीके से बड़े होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम अपने अनुभवों से ही सबसे ज्यादा परिचित होते हैं। यदि हम अपने परिवार के बुजुर्गों से बात करें तो पाएँगे कि उनका बचपन शायद हमारे बचपन से बहुत भिन्न था।

After reading the two examples above, we realise that there are many different ways of growing up. Often we think that there is only one way in which children grow up. This is because we are most familiar with our own experiences. If we talk to elders in our family, we will see that their childhoods were probably very different from ours.

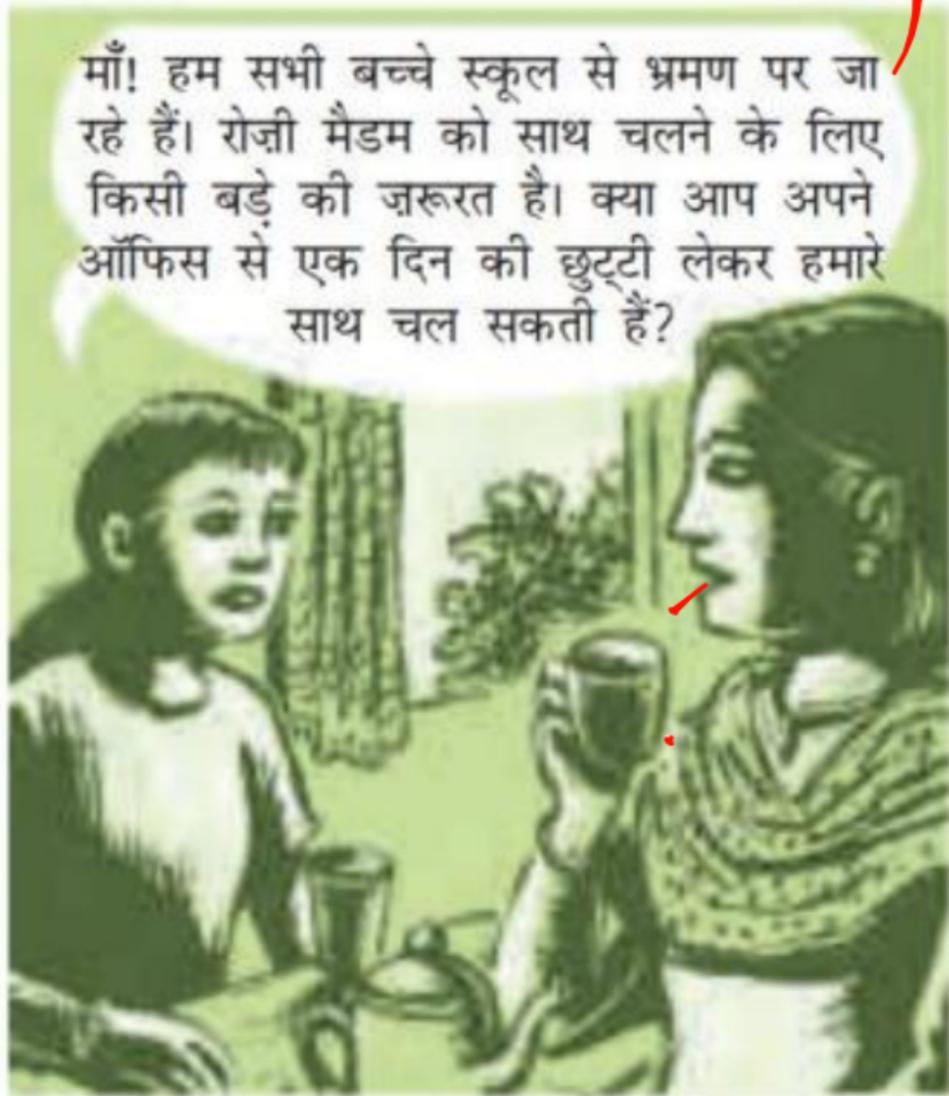
हम यह भी अनुभव करते हैं कि समाज, लड़के और लड़कियों में स्पष्ट अंतर करता है। यह बहुत कम आयु से ही शुरू हो जाता है। उदाहरण के लिए - उन्हें खेलने के लिए भिन्न खिलौने दिए जाते हैं। लड़कों को प्रायः खेलने के लिए कारें दी जाती हैं और लड़कियों को गुड़ियाँ। दोनों ही खिलौने, खेलने में बड़े आनंददायक हो सकते हैं, फिर लड़कियों को गुड़ियाँ और लड़कों को कारें ही क्यों दी जाती हैं? खिलौने बच्चों को यह बताने का माध्यम बन जाते हैं कि जब वे बड़े

We also realise that societies make clear distinctions between boys and girls. This begins from a very young age. We are for example, given different toys to play with. Boys are usually given cars to play with and girls dolls. Both toys can be a lot of fun to play with. Why are girls then given dolls and boys cars? Toys become a way of telling children that they will have different futures when they become men

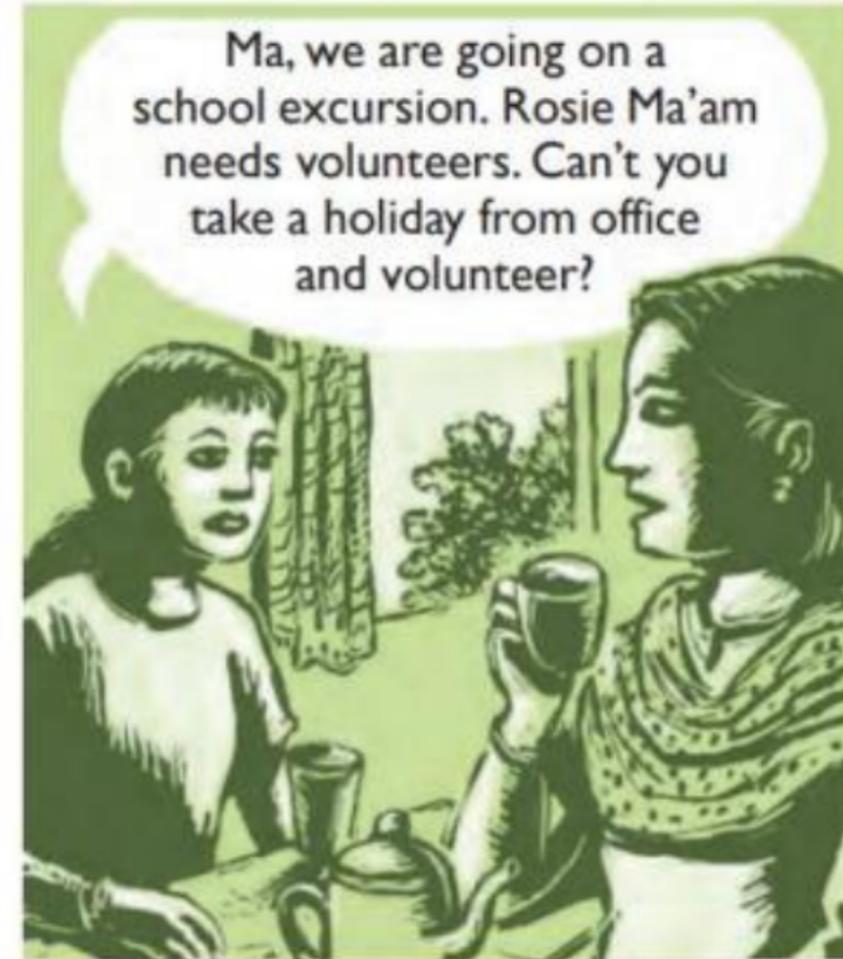
होकर स्त्री और पुरुष बनेंगे, तो उनका भविष्य अलग-अलग होगा। अगर हम विचार करें, तो यह अंतर प्रायः प्रतिदिन की छोटी-छोटी बातों में बना कर रखा जाता है। लड़कियों को कैसे कपड़े पहनने चाहिए, लड़के पार्क में कौन-से खेल खेलें, लड़कियों को धीमी आवाज में बात करनी चाहिए और लड़कों को रौब से- ये सब बच्चों को यह बताने के तरीके हैं कि जब वे बड़े होकर स्त्री और पुरुष बनेंगे, तो उनकी विशिष्ट भूमिकाएँ होंगी। बाद के जीवन में इसका प्रभाव हमारे अध्ययन के विषयों या व्यवसाय के चुनाव पर भी पड़ता है।

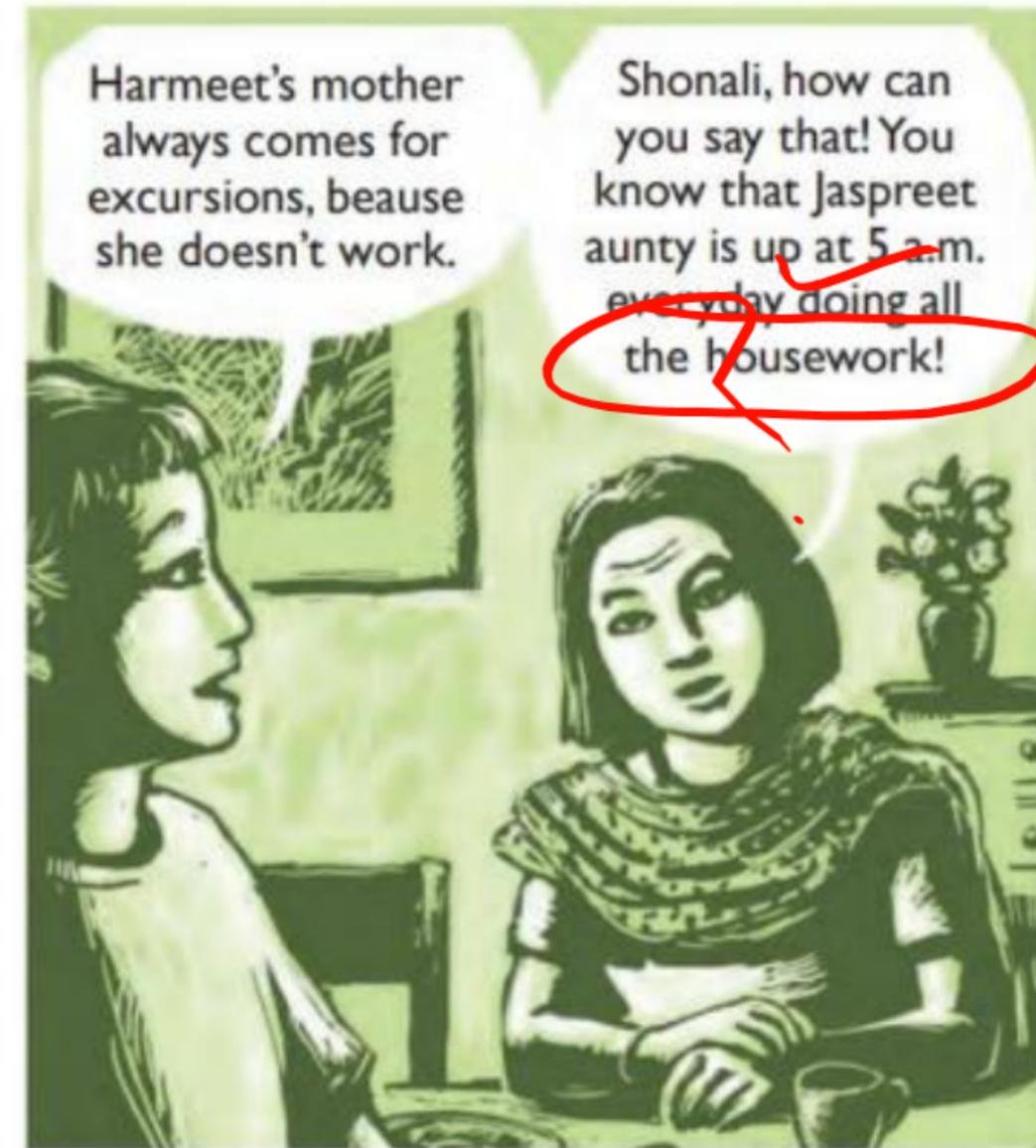
and women. If we think about it, this difference is created in the smallest and most everyday things. How girls must dress, what games boys should play, how girls need to talk softly or boys need to be tough. All these are ways of telling children that they have specific roles to play when they grow up to be men and women. Later in life this affects the subjects we can study or the careers we can choose.

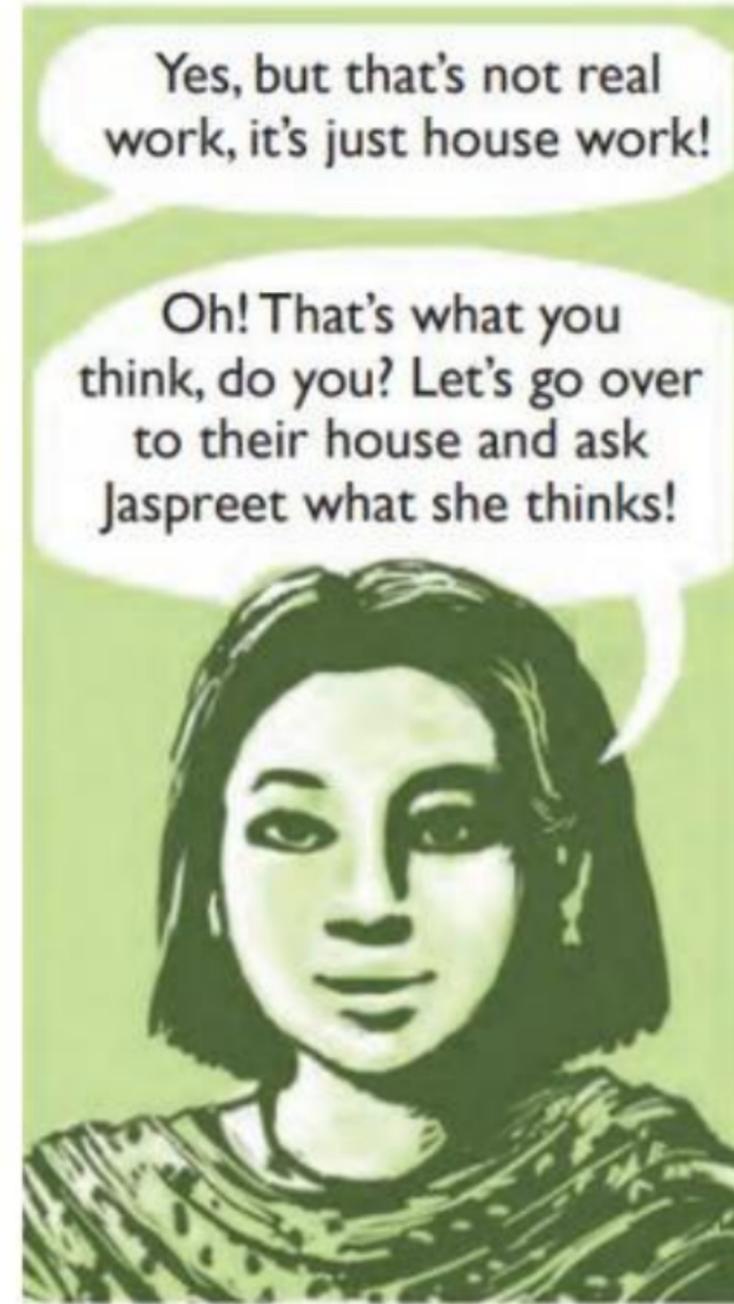
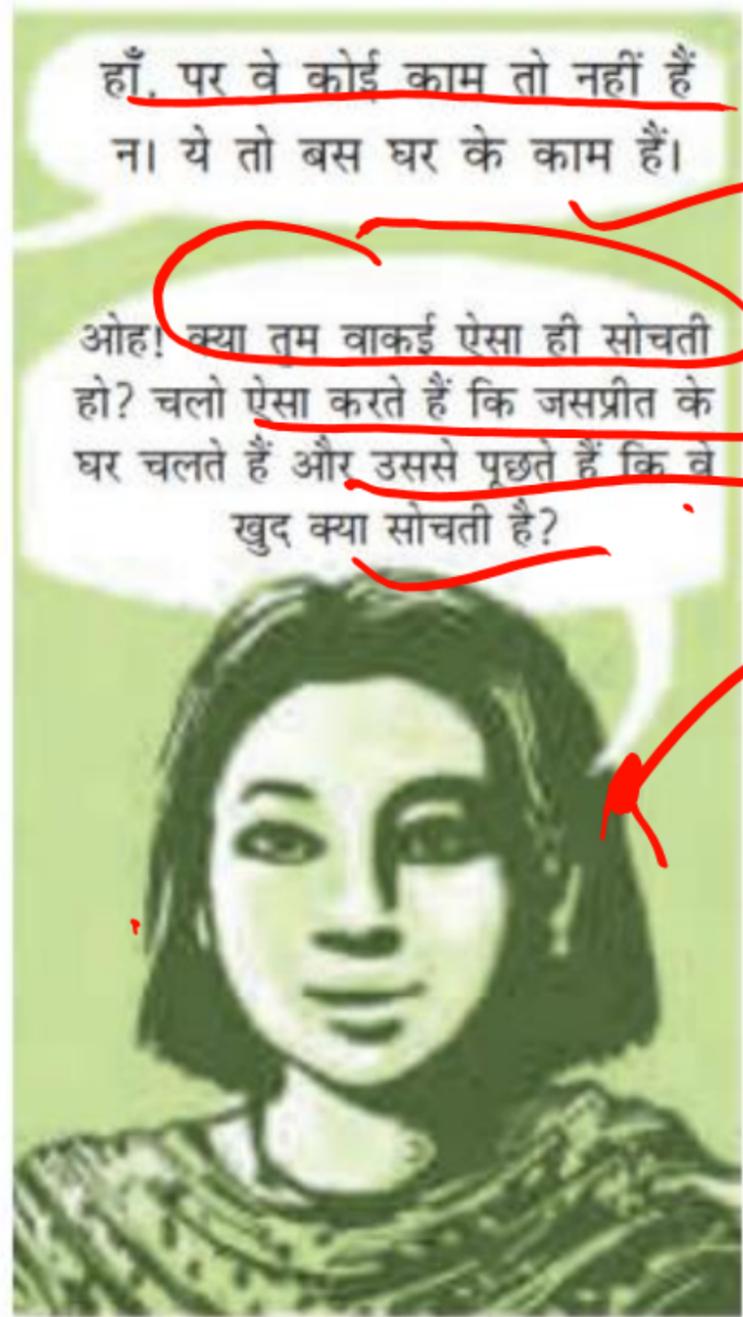
‘मेरी माँ काम नहीं करती’



‘MY MOTHER DOES NOT WORK’



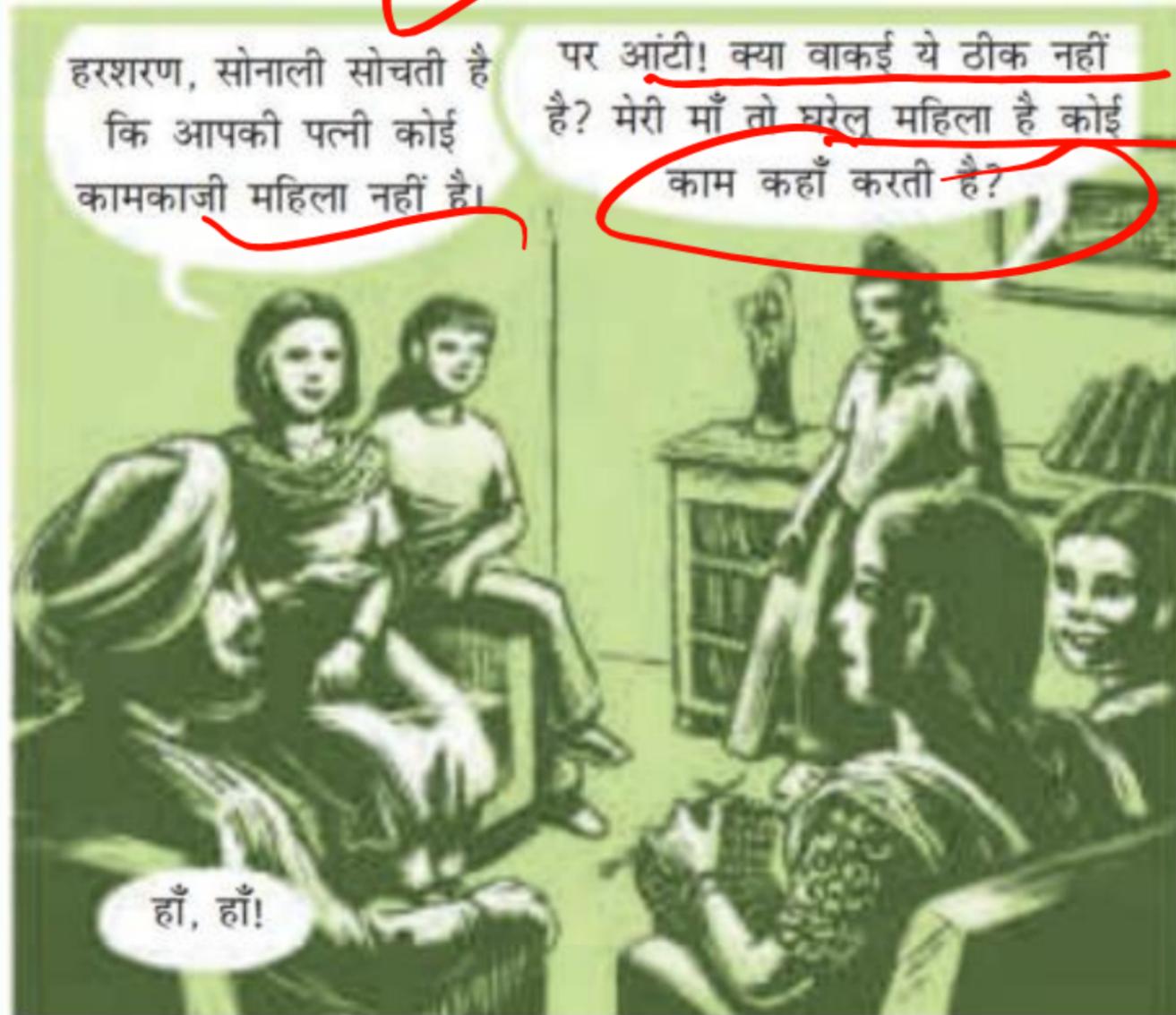




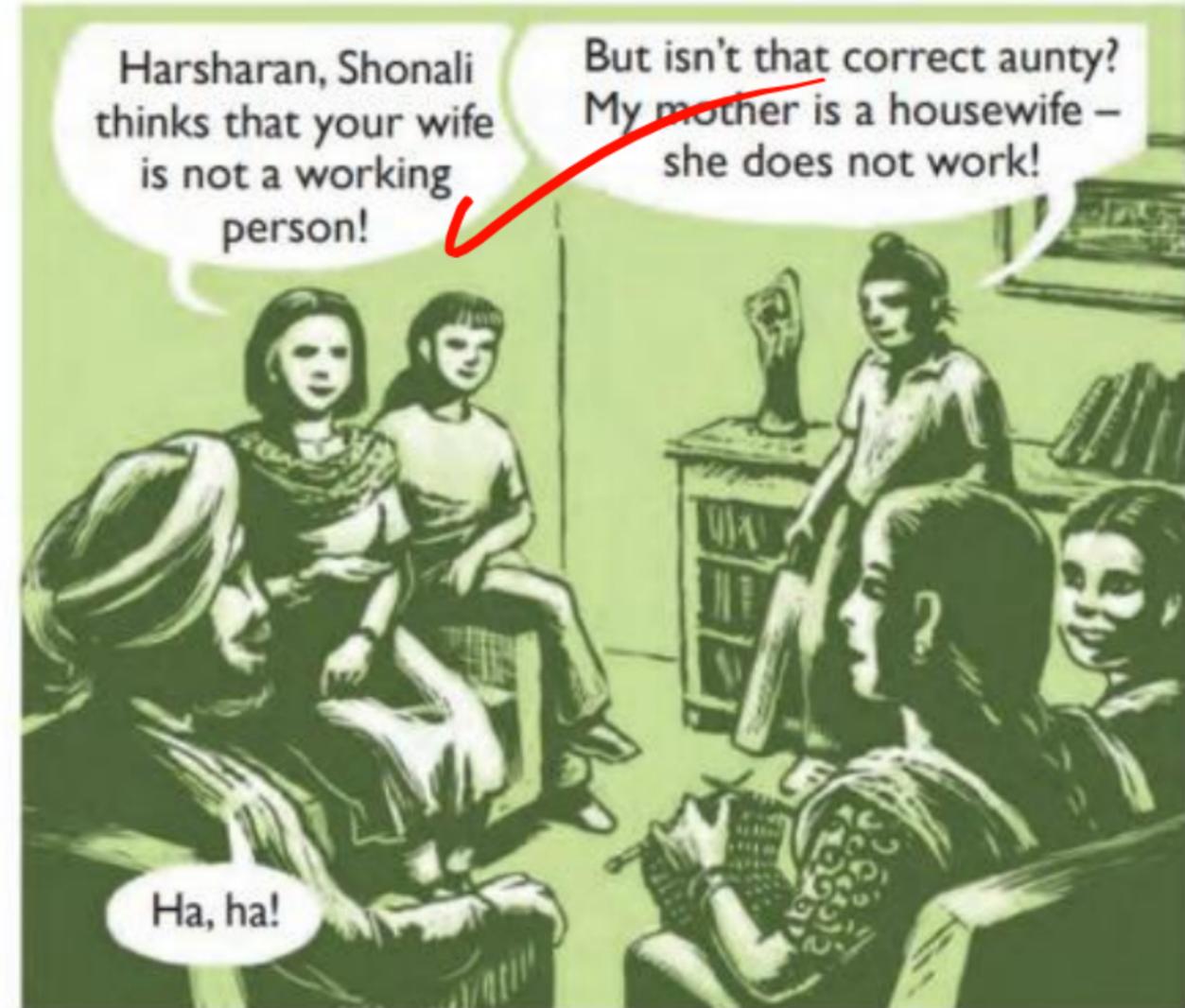
house wife

working

श्री सिंह के घर पर...



At the Singh's house



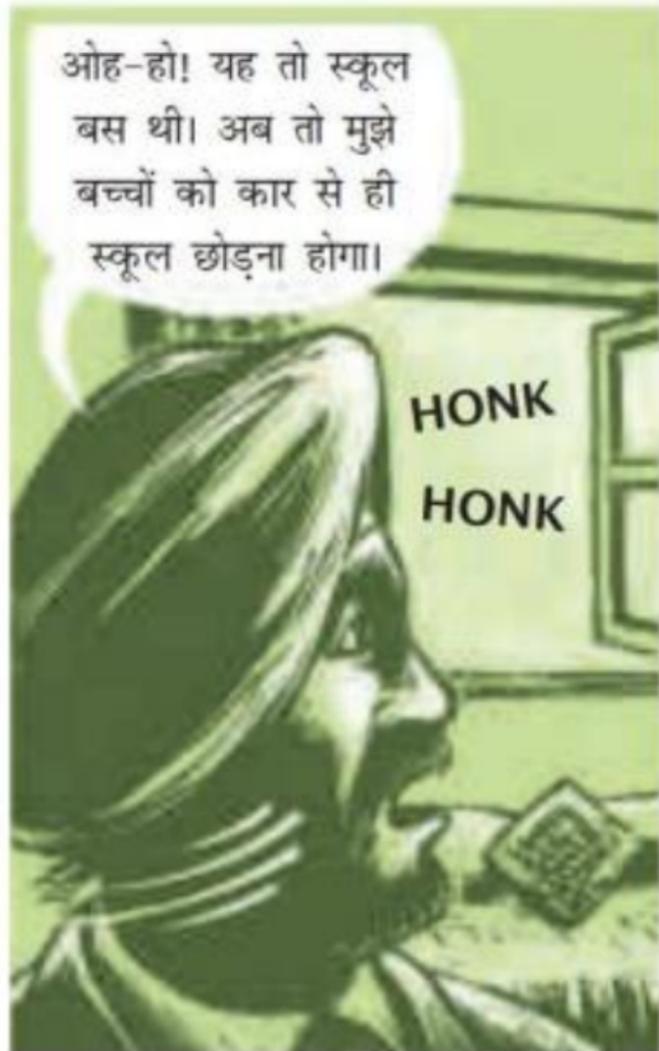


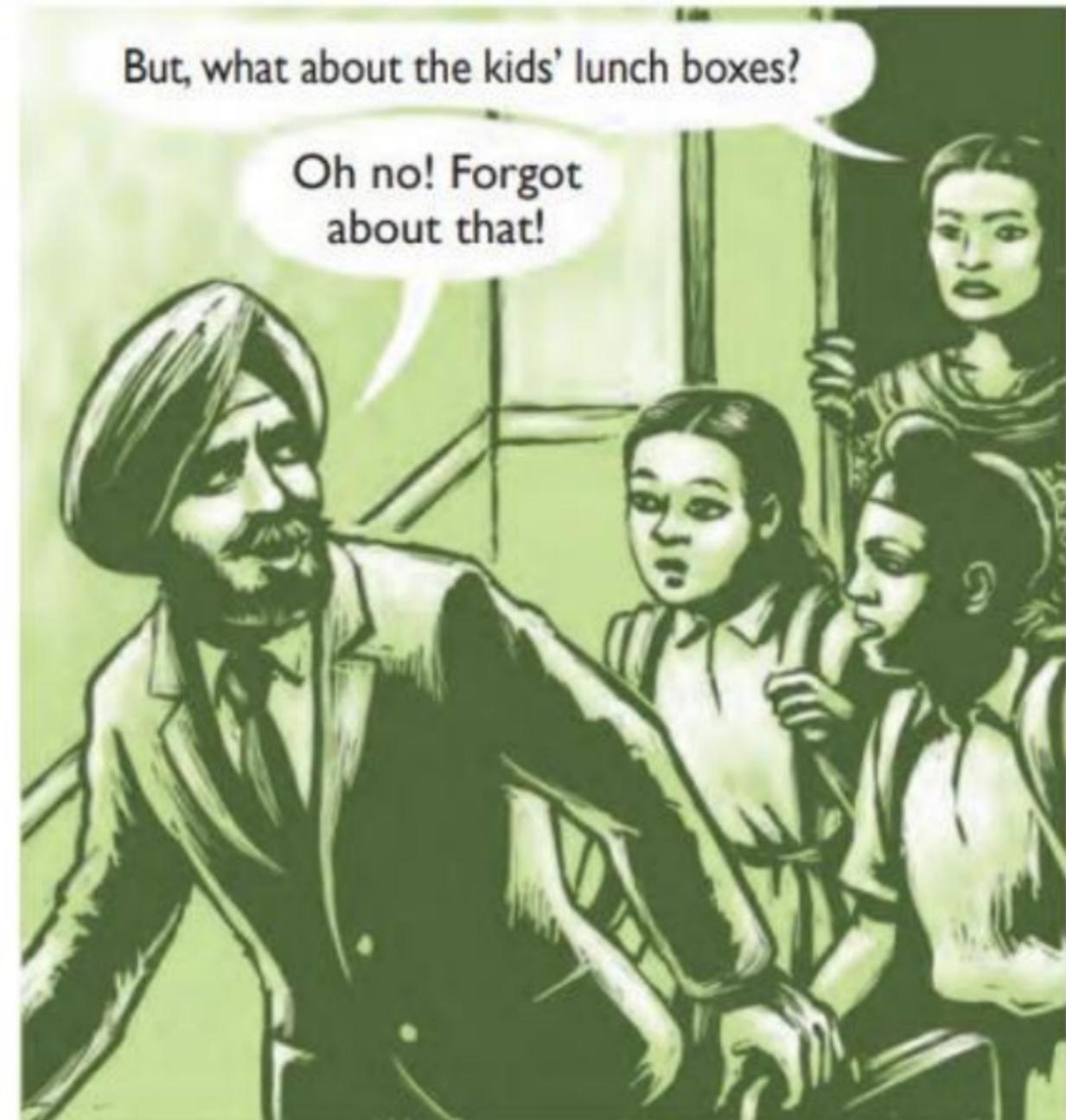
अगली सुबह, 7:30 बजे



Next morning, 7:30 a.m.





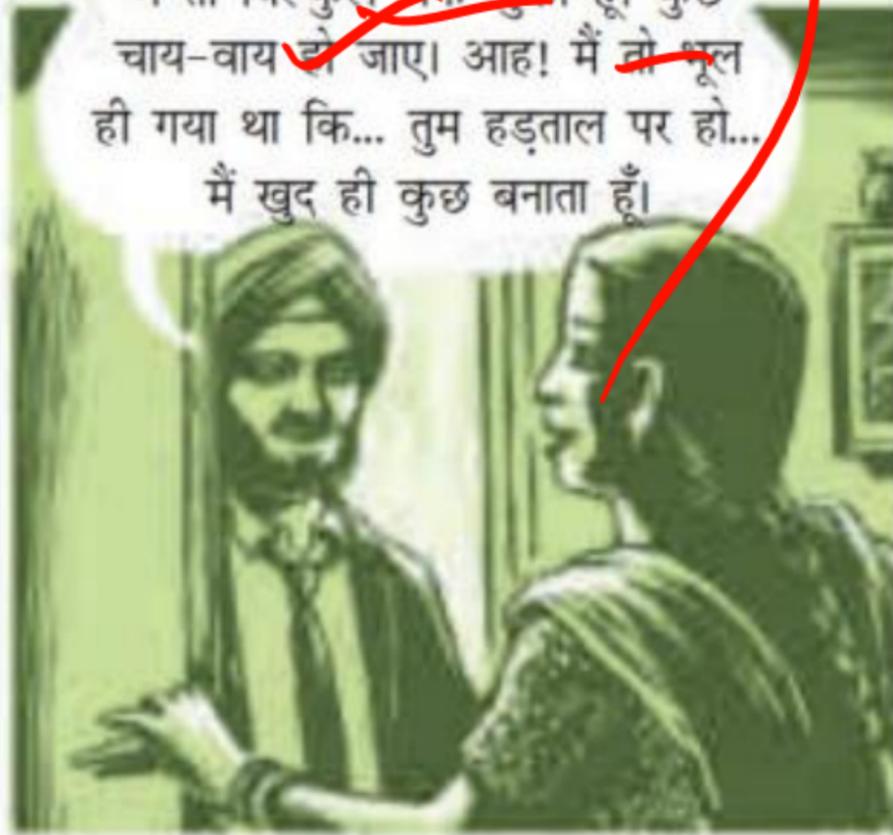




शाम 6 बजे... ✓



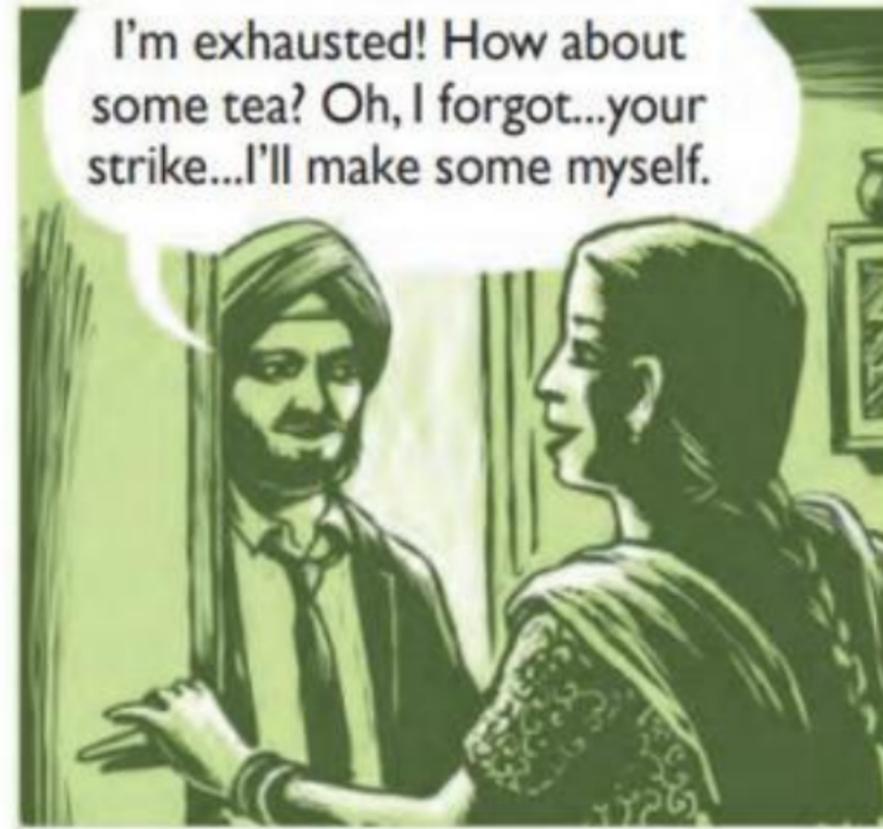
मैं तो बिल्कुल थक चुका हूँ। कुछ चाय-वाय ~~बो~~ जाए। आह! मैं ~~बो~~ भूल ही गया था कि... तुम हड़ताल पर हो... मैं खुद ही कुछ बनाता हूँ।

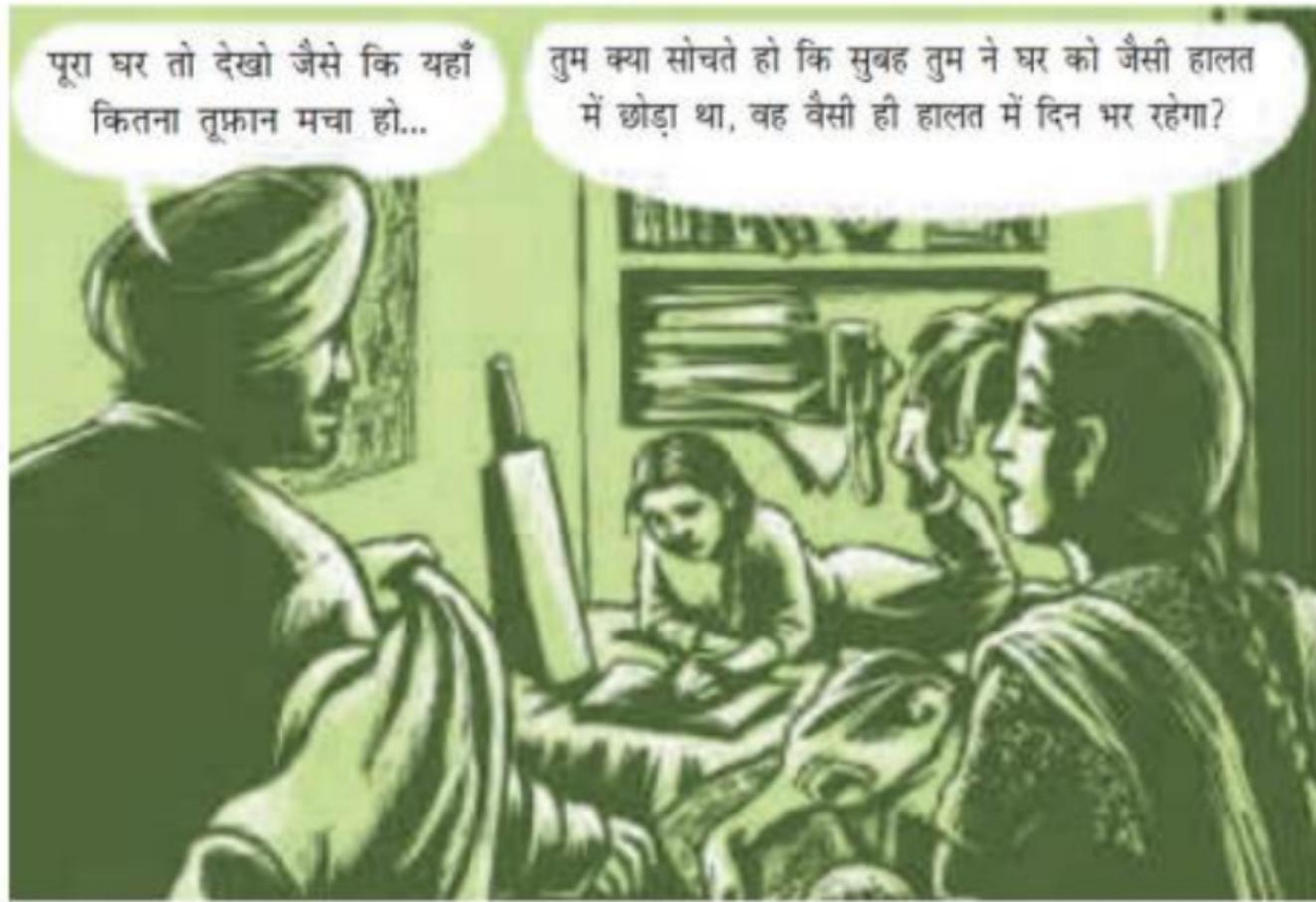


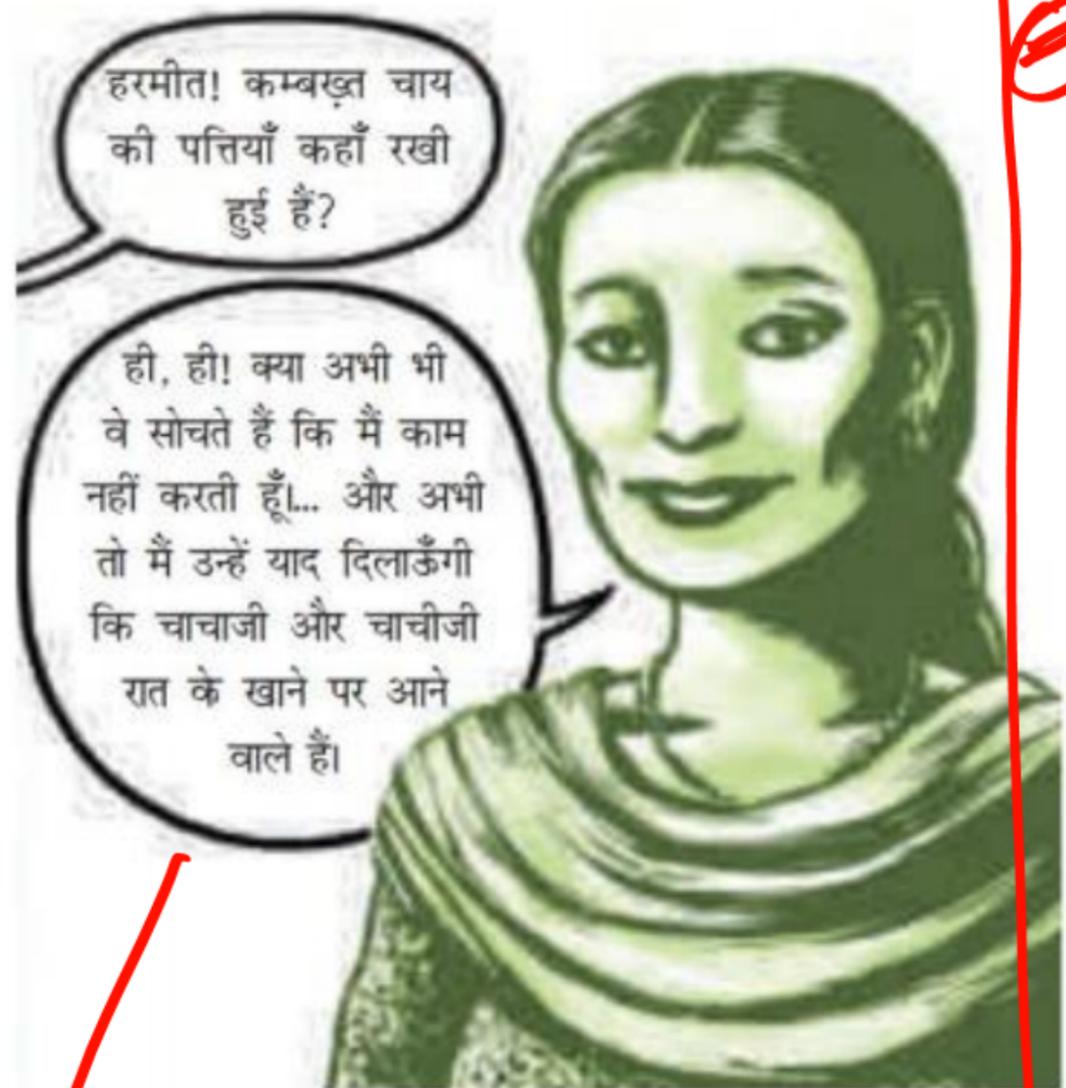
Evening, 6.00 p.m.



I'm exhausted! How about some tea? Oh, I forgot...your strike...I'll make some myself.







150x

अधिकांश समाजों में, जिनमें हमारा समाज भी सम्मिलित है, पुरुषों और स्त्रियों की भूमिकाओं और उनके काम के महत्त्व को समान नहीं समझा जाता है। पुरुषों और स्त्रियों की हैसियत एक जैसी नहीं होती है। आओ देखें कि पुरुषों और स्त्रियों के द्वारा किए जाने वाले कामों में यह असमानता कैसे है।

In most societies, including our own, the roles men and women play or the work they do, are not valued equally. Men and women do not have the same status. Let us look at how this difference exists in the work done by men and women.

घरेलू काम का मूल्य

हरमीत के परिवार को नहीं लगता था कि जसप्रीत घर का जो काम करती थी, वह वास्तव में काम था। उनके परिवार में ऐसी भावना का होना कोई निराली बात नहीं थी। सारी दुनिया में घर के काम की

Valuing housework

Harmeet's family did not think that the work Jaspreet did within the house was real work. This feeling is not unique to their families. Across the world, the main responsibility for housework and **care-giving** tasks, like looking after the family, especially

मुख्य जिम्मेदारी स्त्रियों की ही होती है जैसे देखभाल संबंधी कार्य, परिवार का ध्यान रखना, विशेषकर बच्चों, बुजुर्गों और बीमारों का। फिर भी, जैसा हमने देखा, घर के अंदर किए जाने वाले कार्यों को महत्त्वपूर्ण नहीं समझा जाता। मान लिया जाता है कि वे तो स्त्रियों के स्वाभाविक कार्य हैं, इसीलिए उनके लिए पैसा देने की कोई जरूरत नहीं है। समाज इन कार्यों को अधिक महत्त्व नहीं देता।

children, the elderly and sick members, lies with women. Yet, as we have seen, the work that women do within the home is not recognised as work. It is also assumed that this is something that comes naturally to women. It, therefore, does not have to be paid for. And society **devalues** this work.



✓ मिलानी अपनी बच्ची के साथ

Melani with her daughter.

घर पर कार्य करने वालों का जीवन

उपर्युक्त कहानी में केवल हरमीत की माँ ही घर के काम नहीं करती थीं। काफ़ी सारा काम मंगला करती थी, जो उनके घरेलू काम में मदद के लिए लगाई गई थी। बहुत-से घरों में विशेषकर शहरों और नगरों में लोगों को घरेलू काम के लिए लगा लिया जाता है। वे बहुत काम करते हैं - झाड़ू लगाना, सफ़ाई करना, कपड़े और बर्तन धोना, खाना पकाना, छोटे बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करना, आदि। घर का काम करने वाली अधिकांशतः स्त्रियाँ होती हैं। कभी-कभी

घाई
A

Lives of domestic workers

In the story above, Harmeet's mother was not the only one who did the housework. A lot of the work was done by Mangala, their domestic helper. Many homes, particularly in towns and cities, employ domestic workers. They do a lot of work - sweeping and cleaning, washing clothes and dishes, cooking, looking after young children or the elderly. Most domestic workers are women. Sometimes, even young boys or girls are employed

Domestic

इन कार्यों को करने के लिए छोटे लड़के या लड़कियों को काम पर रख लिया जाता है। घरेलू काम का अधिक महत्त्व नहीं है, इसीलिए इन्हें मजदूरी भी कम दी जाती है। घरेलू काम करने वालों का दिन सुबह पाँच बजे से शुरू होकर देर रात बारह बजे तक भी चलता है। जी-तोड़ मेहनत करने के बावजूद प्रायः उन्हें नौकरी पर रखने वाले उनसे सम्मानजनक व्यवहार नहीं करते हैं। दिल्ली में घरेलू काम करने वाली एक स्त्री मेलानी ने अपने अनुभव के बारे में इस तरह बताया-

to do this work. Wages are low, as domestic work does not have much value. A domestic worker's day can begin as early as five in the morning and end as late as twelve at night! Despite the hard work they do, their employers often do not show them much respect. This is what Melani, a domestic worker had to say about her experience of working in Delhi -

मेलानी

“मेरी पहली नौकरी एक अमीर परिवार में लगी थी, जो तीन-मंजिले भवन में रहता था। मेमसाहब अजीब महिला थीं, जो हर काम करवाने के लिए चिल्लाती रहती थीं। मेरा काम रसोई का था। दूसरी दो लड़कियाँ सफाई का काम करती थीं। हमारा दिन सुबह पाँच बजे शुरू होता। नाश्ते में हमें एक प्याला चाय और दो रूखी रोटियाँ मिलती थीं। हमें तीसरी रोटी कभी नहीं मिली। शाम के समय जब मैं खाना पकाती थी, दोनों लड़कियाँ मुझसे एक और रोटी की माँगती रहती थीं। मैं चुपके से उन्हें एक रोटी दे देती थी और खुद भी एक रोटी ले लेती थी। हमें दिनभर काम करने के बाद बड़ी भूख लगती थी। हम घर में चप्पल नहीं पहन सकते थे। ठंड के मौसम में हमारे पैर सूज जाते थे। मैं मेमसाहब से डरती थी, परंतु मुझे गुस्सा भी आता और अपमानित भी महसूस करती थी। क्या हम दिनभर काम नहीं करते थे? क्या हम कुछ सम्मानजनक व्यवहार के योग्य नहीं थे?”

Domestics

“My first job was with a rich family that lived in a three-storeyed house. The memsahib was very strange as she would shout to get any work done. My work was in the kitchen. There were two other girls who did the cleaning. Our day would begin at 5 o'clock. For breakfast we would get a cup of tea and two dry rotis. We could never get a third roti. In the evening, when I cooked the food, the two other girls would beg me to give them an extra roti. I would secretly give it to them and make an extra one for myself. We were so hungry after working through the day! We could not wear chappals in the house. In the winter, our feet would swell up with the cold. I used to feel scared of the memsahib but also felt angry and humiliated. Did we not work all day? Did we not deserve to be treated with some respect?”

क्या हरमीत और सोनाली का यह कहना सही था कि हरमीत की माँ काम नहीं करतीं?

आप क्या सोचते हैं, अगर आपकी माँ या वे लोग, जो घर के काम में लगे हैं, एक दिन के लिए हड़ताल पर चले जाएँ, तो क्या होगा?

आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि सामान्यतया पुरुष या लड़के घर का काम नहीं करते? आपके विचार में क्या उन्हें घर का काम करना चाहिए?

Were Harmeet and Shonali correct in saying that Harmeet's mother did not work?

What do you think would happen if your mother or those involved in doing the work at home went on a strike for a day?

Why do you think that men and boys generally do not do housework? Do you think they should?

वास्तव में, जिसे हम घरेलू काम कहते हैं, उसमें अनेक कार्य सम्मिलित रहते हैं। इनमें से कुछ कामों में बहुत शारीरिक श्रम लगता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में औरतों और लड़कियों को दूर-दूर से पानी लाना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों और लड़कियों को जलाऊ लकड़ी के भारी गट्टर सिर पर ढोने पड़ते हैं। कपड़े धोने, साफ़ाई करने, झाड़ू लगाने और वजन उठाने के कामों में झुकने, उठाने और सामान लेकर चलने की ज़रूरत होती है। बहुत-से काम जैसे खाना बनाने आदि में लंबे समय तक गर्म चूल्हे के सामने खड़ा रहना पड़ता है। स्त्रियाँ जो काम करती हैं, वह भारी और थकाने वाला शारीरिक काम होता है— जबकि हम आमतौर पर सोचते हैं कि पुरुष ही ऐसा काम कर सकते हैं।

In fact, what we commonly term as housework actually involves many different tasks. A number of these tasks require heavy physical work. In both rural and urban areas women and girls have to fetch water. In rural areas women and girls carry heavy headloads of firewood. Tasks like washing clothes, cleaning, sweeping and picking up loads require bending, lifting and carrying. Many chores, like cooking, involve standing for long hours in front of hot stoves. The work women do is strenuous and physically demanding — words that we normally associate with men.

हरियाणा और तमिलनाडु राज्यों में
स्त्रियाँ प्रति सप्ताह कुल कितने घंटे
काम करती हैं?



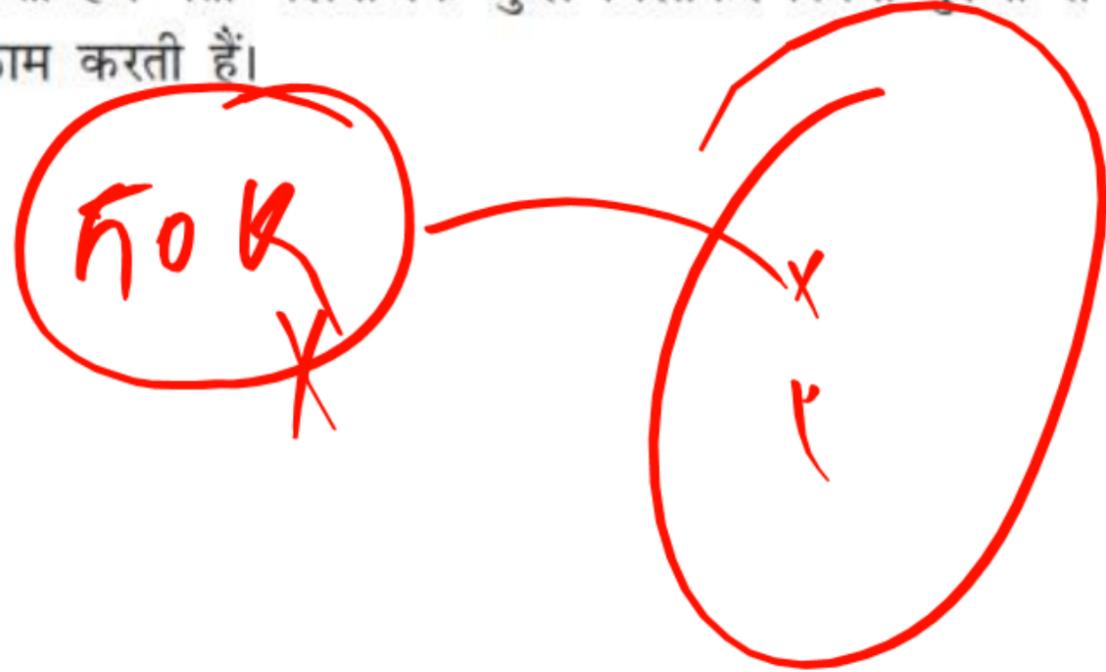
इस संबंध में स्त्रियों और पुरुषों में
कितना फ़र्क दिखाई देता है?



What are the total number of work
hours spent by women in Haryana
and Tamil Nadu each week?

How does this compare with the
total number of work hours spent
by men?

घरेलू और देखभाल के कामों का एक अन्य पहलू, जिसे हम महत्त्व नहीं देते, वह है इन कामों में लगने वाला लंबा समय। वास्तव में यदि हम स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले घर के और बाहर के कामों को जोड़ें, तो हमें पता चलेगा कि कुल मिलाकर स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक काम करती हैं।



Another aspect of housework and care-giving that we do not recognise is that it is very time consuming. In fact, if we add up the housework and the work women do outside the home, we find that women spend much more time working than men and have much less time for leisure.

निम्न तालिका में भारत के केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन द्वारा किए गए विशेष अध्ययन के कुछ आँकड़े हैं (1998-99)। देखिए, क्या आप रिक्त स्थानों को भर सकते हैं?



Below is some data from a special study done by the Central Statistical Organization of India (1998-1999). See if you can fill in the blanks.

राज्य	स्त्रियों के वेतन सहित कार्य के घंटे (प्रति सप्ताह)	स्त्रियों के अवैतनिक घरेलू काम के घंटे (प्रति सप्ताह)	स्त्रियों के कुल काम के घंटे	पुरुषों के वेतन सहित कार्य के घंटे (प्रति सप्ताह)	पुरुषों के अवैतनिक घरेलू काम के घंटे (प्रति सप्ताह)	पुरुषों के कुल काम के घंटे
हरियाणा	23	30	?	38	2	?
तमिलनाडु	19	35	?	40	4	?

State	Women Paid (Work hours per week)	Women Unpaid (Housework hours per week)	Women (Total)	Men Paid (Work hours per week)	Men Unpaid (Housework hours per week)	Men (Total)
Haryana	23	30	?	38	2	?
Tamil Nadu	19	35	?	40	4	?

महिलाओं का काम और समानता

जैसा कि हमने देखा, महिलाओं के घरेलू और देखभाल के कामों को कम महत्त्व देना एक व्यक्ति या परिवार का मामला नहीं है। यह स्त्रियों और पुरुषों के बीच असमानता की एक बड़ी सामाजिक व्यवस्था का ही भाग है। इसीलिए इसके समाधान हेतु, जो कार्य

in

Women's work and equality

As we have seen the low value attached to women's household and care-giving work is not an individual or family matter. It is part of a larger system of inequality between men and women. It, therefore,

in

बहुत-सी स्त्रियाँ जैसे कहानी में सोनाली की माँ और हरियाणा व तमिलनाडु की महिलाएँ जिनका सर्वेक्षण किया गया- घर के अंदर व बाहर दोनों जगह काम करती हैं। इसे प्रायः महिलाओं के काम के दोहरे बोझ के रूप में जाना जाता है।

*Many women like Shonali's mother in the story and the women in Tamil Nadu and Haryana who were surveyed work both inside and outside the home. This is often referred to as the **double burden** of women's work.*



मध्य प्रदेश के एक गांव में आँगनवाड़ी केंद्र में बच्चे

Children at an Anganwadi centre in a village in Madhya Pradesh.

किए जाने हैं वे केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक स्तर पर नहीं, वरन् शासकीय स्तर पर भी होने चाहिए। हम जानते हैं कि समानता हमारे संविधान का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। संविधान कहता है कि स्त्री या पुरुष होने के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता। परंतु वास्तविकता में लिंगभेद किया जाता है। सरकार इसके कारणों को समझने के लिए और इस स्थिति का सकारात्मक निदान ढूँढने के लिए वचनबद्ध है। उदाहरण के लिए सरकार जानती है कि बच्चों की देखभाल और घर के काम का बोझ महिलाओं और लड़कियों पर पड़ता है। स्वाभाविक रूप से इसका असर लड़कियों के स्कूल जाने पर भी पड़ता है। इससे ही निश्चित होता है कि क्या महिलाएँ

has to be dealt with through actions not just at the level of the individual or the family but also by the state. This naturally has an impact on whether girls can attend school. It determines whether women can work outside the house and what kind of jobs and careers they can have. The government has set up

घर के बाहर काम कर सकेंगी और यदि करेंगी, तो किस प्रकार का काम या कार्यक्षेत्र चुनेंगी। पूरे देश के कई गाँवों में शासन ने आँगनवाड़ियाँ और बालवाड़ियाँ खोली हैं। शासन ने एक कानून बनाया है, जिसके तहत यदि किसी संस्था में महिला कर्मचारियों की संख्या 30 से अधिक है, तो उसे वैधानिक रूप से बालवाड़ी (क्रेच) की सुविधा देनी होगी। बालवाड़ी की व्यवस्था होने से बहुत-सी महिलाओं को घर से बाहर जाकर काम करने में सुविधा होगी। इससे बहुत-सी लड़कियों का स्कूल जाना भी संभव हो सकेगा।

CAMMY
AM

महिला

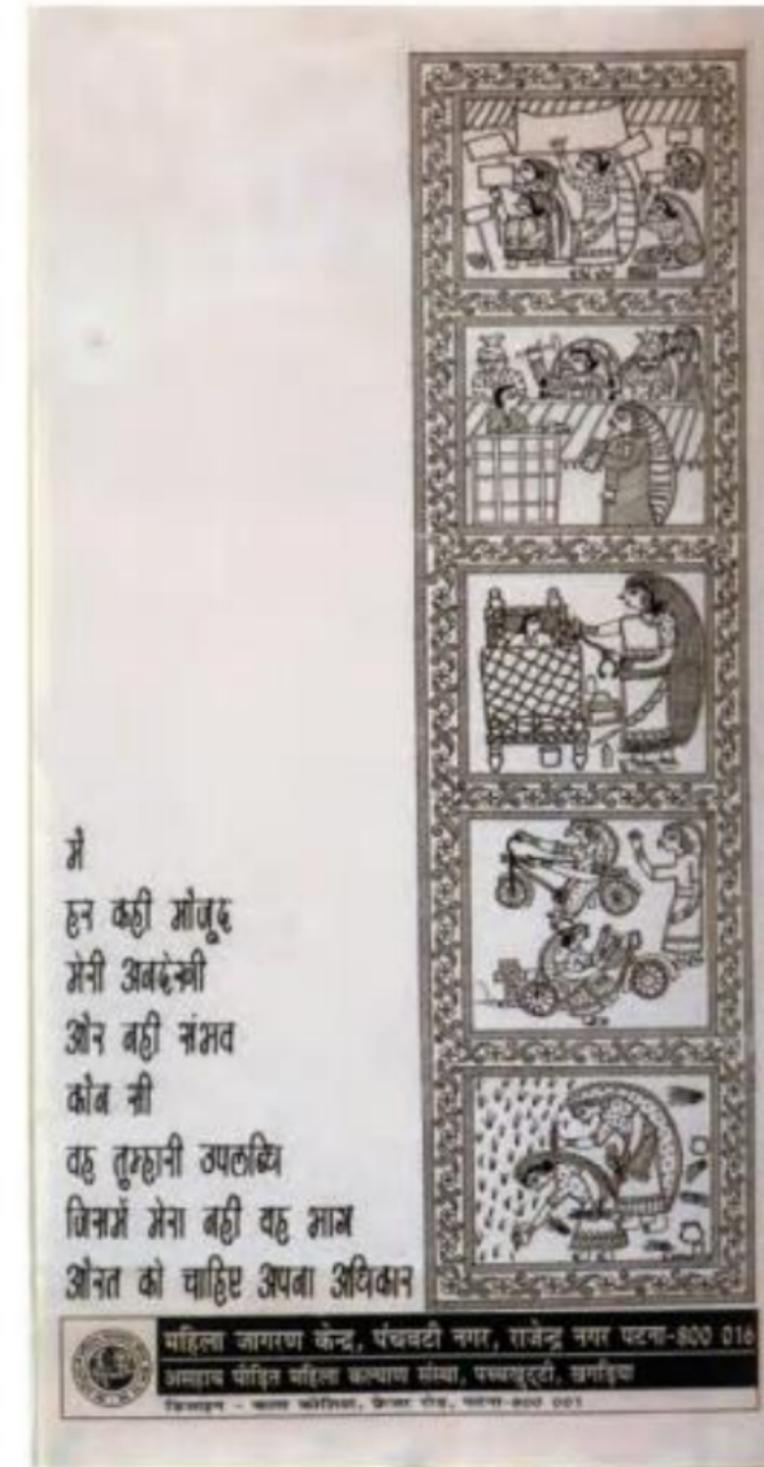
anganwadis or child-care centres in several villages in the country. The government has passed laws that make it mandatory for organisations that have more than 30 women employees to provide crèche facilities. The provision of crèches helps many women to take up employment outside the home. It also makes it possible for more girls to attend schools.

to attend

आप क्या सोचते हैं, यह पोस्टर क्या कहने की कोशिश कर रहा है?



What do you think this poster is trying to say?



यह पोस्टर बंगाल की महिलाओं के एक समूह ने बनाया है। क्या इसे आधार बनाकर आप कोई अच्छा-सा नारा तैयार कर सकते हैं?



This poster was created by a women's group in Bengal. Can you write an interesting slogan for the poster?



अभ्यास

1. साथ में दिए गए कुछ कथनों पर विचार कीजिए और बताइए कि वे सत्य हैं या असत्य? अपने उत्तर के समर्थन में एक उदाहरण भी दीजिए।
2. घर का काम अदृश्य होता है और इसका कोई मूल्य नहीं चुकाया जाता। घर के काम शारीरिक रूप से थकाने वाले होते हैं। घर के कामों में बहुत समय खप जाता है।

अपने शब्दों में लिखिए कि 'अदृश्य होने' 'शारीरिक रूप से थकाने' और 'समय खप जाने' जैसे वाक्यांशों से आप क्या समझते हैं? अपने घर की महिलाओं के काम के आधार पर हर बात को एक उदाहरण से समझाइए।

EXERCISES

1. Are the statements given alongside true or false. Support your answer with the use of an example -
2. Housework is *invisible* and unpaid work.

Housework is *physically demanding*.

Housework is *time consuming*.

Write in your own words what is meant by the terms 'invisible', 'physically demanding', and 'time consuming'? Give one example of each based on the household tasks undertaken by women in your home.

3. ऐसे विशेष खिलौनों की सूची बनाइए, जिनसे लड़के खेलते हैं और ऐसे विशेष खिलौनों की भी सूची बनाइए, जिनसे केवल लड़कियाँ खेलती हैं। यदि दोनों सूचियों में कुछ अंतर है, तो सोचिए और बताइए कि ऐसा क्यों है? सोचिए कि क्या इसका कुछ संबंध इस बात से है कि आगे चलकर वयस्क के रूप में बच्चों को क्या भूमिका निभानी होगी?

3. Make a list of toys and games that boys typically play and another for girls. If there is a difference between the two lists, can you think of some reasons why this is so? Does this have any relationship to the roles children have to play as adults?

4. अगर आपके घर में या आस-पास, घर के कामों में मदद करने वाली कोई महिला है तो उनसे बात कीजिए और उनके बारे में थोड़ा और जानने की कोशिश कीजिए कि उनके घर में और कौन-कौन हैं? वे क्या करते हैं? उनका घर कहाँ है? वे रोज कितने घंटे तक काम करती हैं? वे कितना कमा लेती हैं? इन सारे विवरणों को शामिल कर, एक छोटी-सी कहानी लिखिए।

4. If you have someone working as a domestic help in your house or locality talk to her and find out a little bit more about her life - Who are her family members? Where is her home? How many hours does she work? How much does she get paid? Write a small story based on these details.

(क) सभी समुदाय और समाजों में लड़कों और लड़कियों की भूमिकाओं के बारे में एक जैसे विचार नहीं पाए जाते।

(ख) हमारा समाज बढ़ते हुए लड़कों और लड़कियों में कोई भेद नहीं करता।

(ग) वे महिलाएँ जो घर पर रहती हैं कोई काम नहीं करतीं।

(घ) महिलाओं के काम, पुरुषों के काम की तुलना में कम मूल्यवान समझे जाते हैं।

a. All societies do not think similarly about the roles that boys and girls play.

b. Our society does not make distinctions between boys and girls when they are growing up.

c. Women who stay at home do not work.

d. The work that women do is less valued than that of men.

शब्द-संकलन

अस्मिता (पहचान): यह एक प्रकार से स्वयं के होने यानी अपने अस्तित्व के प्रति जागरूकता का भाव है। एक व्यक्ति की कई अस्मिता हो सकती है। उदाहरण के लिए - एक ही व्यक्ति को एक लड़की, बहन और संगीतकार की तरह अस्मिता जा सकता है।

दोहरा बोझ: शाब्दिक रूप में इसका अर्थ है - दो गुना वजन। सामान्यतः इस शब्द का महिलाओं के काम की स्थितियों को समझाने के लिए प्रयोग किया गया है। यह इस तथ्य को स्वीकार करता है कि महिलाएँ आमतौर पर घर के भीतर और घर के बाहर दोहरा कार्य-भार सँभालती हैं।

देखभाल: देखभाल के अंतर्गत अनेक काम आते हैं, जैसे - संभालना, ख्याल रखना, पोषण करना आदि। शारीरिक कार्यों के अतिरिक्त इसमें गहन भावनात्मक पहलू भी सम्मिलित है।

अवमूल्यता: जब कोई अपने काम के लिए अपेक्षित मान्यता या स्वीकृति नहीं पाता है, तब वह स्वयं को अवमूल्यित महसूस करता है। उदाहरण के लिए देखें, अगर कोई लड़का अपने मित्र के लिए घंटों सोच-विचार कर, बहुत खोजकर एक 'उपहार' बनाता है और उसका मित्र उसे देखकर कुछ भी न कहे तो ऐसे में पहला लड़का अवमूल्यित महसूस करता है।

Glossary

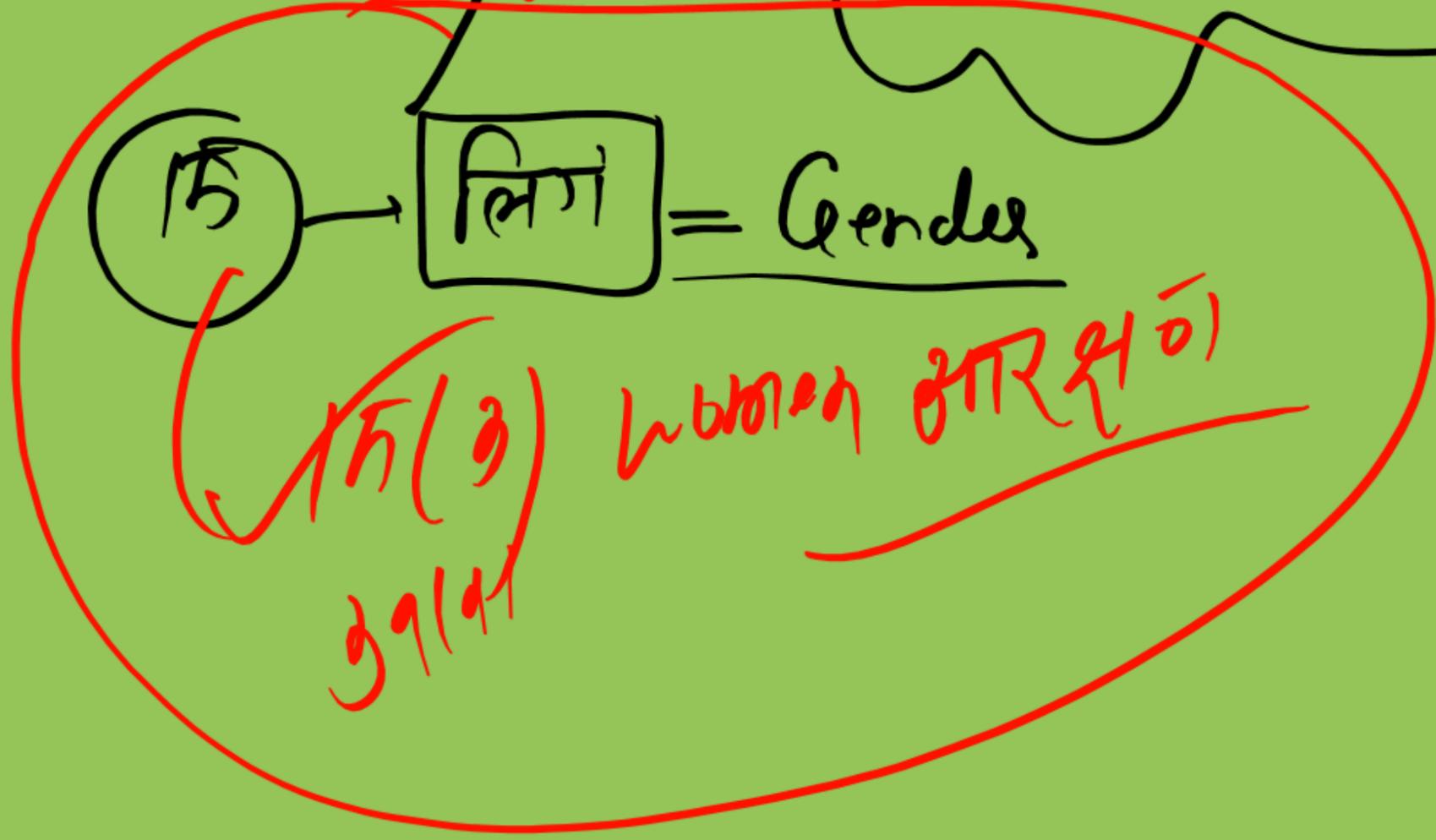
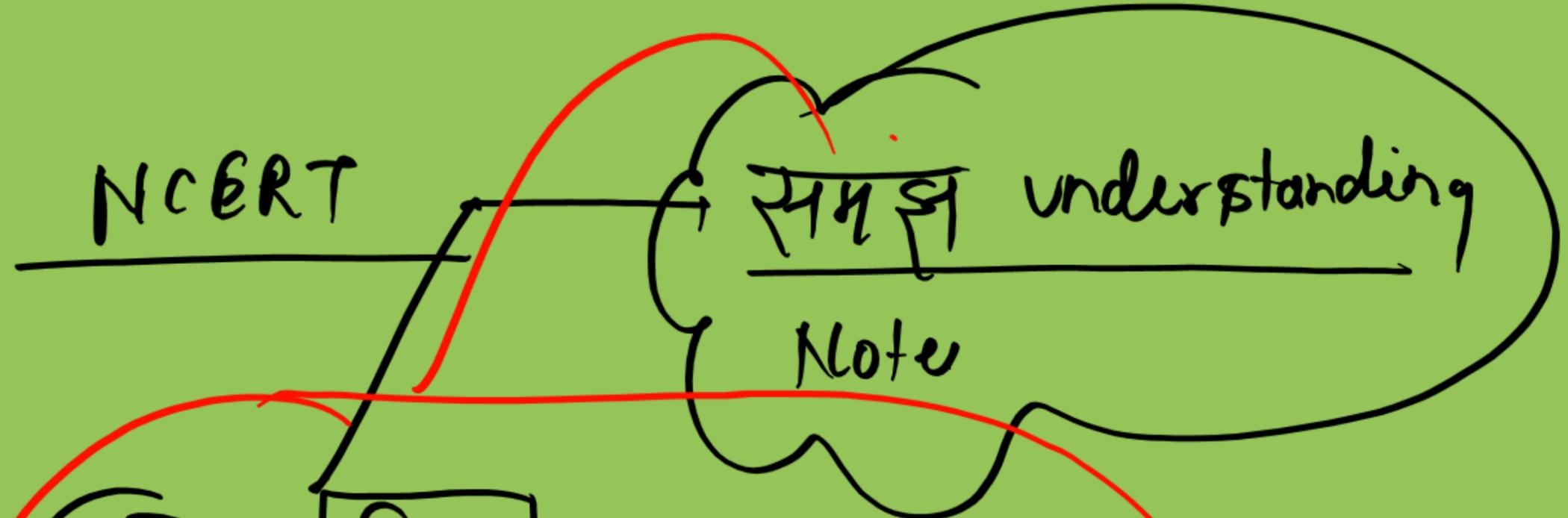
Identity: Identity is a sense of self-awareness of who one is. Typically, a person can have several identities. For example, a person can be a girl, a sister and a musician.

Double-burden: Literally means a double load. This term is commonly used to describe the women's work situation. It has emerged from a recognition that women typically labour both inside the home (housework) and outside.

Care-giving: Care-giving refers to a range of tasks related to looking after and nurturing. Besides physical tasks, they also involve a strong emotional aspect.

De-valued: When someone is not given due recognition for a task or job they have done, they can feel de-valued. For example, if a boy has put in a lot of effort into making a special birthday gift for his friend and this friend does not say anything about this, then the boy may feel de-valued.

धन्यवाद



पाहते है
Nanta

Reels ✓

Tv ✓

+

+ Excercises

मपा करना
चाहिये

✓